



VOLUME, 33
December , 2024

AU
TALK

WHAT'S UP ON AU CAMPUS

2025
Loading

Editorial Board

CONTENTS

AU TALK is a monthly digital newsletter of the University of Allahabad. **AU TALK** a long cherished dream and a brainchild of Hon'ble Vice Chancellor, has been regularly and successfully disseminating news and information on various academic and research activities happening across the Departments/Centres of the University. The original idea behind the digital platform is not only to spread out information about various developments related to the departments, but also, to revitalize a connection among them. **AU TALK** as a digital space facilitated its faculty members to publish their own informative articles, research accomplishments and potential future plans.

Patron: Hon'ble Vice Chancellor

Members of the Editorial Board:

Chief Editor - Dr. Chandranshu Sinha, Associate Professor, & Coordinator, Dept. of Psychology

- Dr. Nakul Kundra, Associate Professor, Dept. of English
- Dr. Jaswinder Singh, Assistant Professor, Dept. of English
- Dr. Charu Vaid, Assistant Professor, Dept. of English
- Dr. Shiban Ur Rahman, Assistant Professor, Dept. of English
- Dr. Sandeep Kumar Meghwal, Assistant Professor, Dept. of Visual Arts
- Mr. Vishal Vijay, Assistant Professor, Centre for Theatre & Film
- Ms. Jigyasa Kumar, Curator, Vizianagram Hall & Museum

To publish your news/event in the upcoming edition, please send the write-up alongwith a relevant picture to:

vizianagramcurator.au@gmail.com

- ❖ Institute of Gandhian Thought & Peace Studies - Pg 3-4
- ❖ Department of Hindi - 5
- ❖ Department of Education - 6
- ❖ Department of Philosophy - 7
- ❖ Department of Chemistry - 8
- ❖ Department of Education - 8
- ❖ Incubation Centre - 9
- ❖ Department of Mathematics - 9
- ❖ ARTICLE - University of Allahabad: As I Know This Great Institution by Prof. M.H. Qureshi, JNU - 10-11
- ❖ Book of the Edition - 12
- ❖ Movie of the Edition - 12

गाँधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान

महात्मा गांधी का सम्पूर्ण वैचारिक विमर्श व्यक्ति के सामाजिक और आध्यात्मिक उन्नयन पर आधारित था। उक्त बातें दिनांक 20 दिसम्बर 2024 को गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान के कस्तूरबा गांधी सभागार में प्रो. जे. एस. माथुर स्मृति व्याख्यान माला के अंतर्गत **“स्वच्छता पर गांधी परिप्रेक्ष्य : एक परिचर्चा”** विषय पर अपने व्याख्यान में बोलते हुए मुख्य वक्ता के रूप में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष एवं एफ.आर.सी. के चेयरमैन प्रो. आशीष सक्सेना ने कही। उन्होंने आगे कहा कि महात्मा गांधी ऐसे कर्मयोगी थे जो पीड़ित मानवता के समुचित उद्धार के लिए सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह पर आधारित कर्म क्षेत्र के माध्यम से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहे थे। प्रो. आशीष ने आगे कहा कि महात्मा गांधी कि सम्पूर्ण कार्य तकनीक भारतवर्ष कि समृद्ध ऐतिहासिक विरासत मूल्यों और लक्ष्यों कि पुनरावृत्ति है। प्रो. सक्सेना ने आगे कहा कि गांधी का सामाजिक सुधार का कार्य विशेषकर वंचितों, शोषितों और अछूतोंद्वारा पर केन्द्रित था। उन्होंने सामाजिक समरसता और समाज में एकत्व भाव कि स्थापना के लिए विभिन्न प्रयासों और तकनीक का सफल सदुपयोग किया। उदाहरण के स्वरूप महात्मा गांधी पहले ऐसे सामाजिक व्यक्ति है, जिन्होंने अछूतों के सुधार तथा उन्हें सम्मान के साथ विकास कि मुख्य धारा में स्थापित करने का प्रयास किया।

व्याख्यान माला में विशिष्ट वक्ता के रूप में **गांधी और पर्यावरण: जल संकट** के विषय पर अपना उद्बोधन देते हुए चौधरी महादेव प्रसाद पी जी कॉलेज के रसायनशास्त्र विभाग के डॉ प्रमोद शर्मा ने कहा कि लगातार बढ़ती जनसंख्या और असंयमित उपभोग के कारण जल का संकट पूरी दुनिया में बढ़ा है। भारत इससे अछूता नहीं। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य में पेयजल उपलब्ध कराना भी एक प्रमुख मुद्दा है आंकड़े बताते हैं की भूजल का स्तर लगातार गिर रहा है, रिचार्ज की तुलना में यदि समय रहते हम नहीं चेते तो एक दिन धरती ने यदि यह कह दिया कि हमारे पास जल ही नहीं है।



व्याख्यान में विषय प्रवर्तन करते हुए संस्थान के समन्वयक डॉ अविनाश कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि महात्मा गांधी का संपूर्ण जीवन विमर्श अत्यंत वैविध्यपूर्ण है और उसमें मानव जीवन की सभी समस्याओं पर विचार किया गया। डॉ श्रीवास्तव ने आगे कहा कि विकास के वर्तमान परिवेश में आज सबसे बड़ी समस्या जलवायु नैतिकी, मानव गरिमा और सामाजिक संदर्भों की है। ये अजीब संयोग है कि पृथ्वी के ¾ हिस्सों में पानी है लेकिन हम सबको बोतल बंद पानी खरीदकर पीने के लिए विवश होना पड़ रहा है। डॉ अविनाश ने आगे कहा कि महात्मा गांधी ने इस संकट को पहचान लिया था और आगे कहा था कि **“आज विकास तो हो रहा है लेकिन वस्तुओं का न कि व्यक्तियों का”** डॉ श्रीवास्तव ने आगे कहा कि प्रकृति के अनैतिक अतार्किक और अंधाधुंध दोहन का दुष्परिणाम है कि आज हमारे सम्मुख स्वच्छता, स्वास्थ्य और पर्यावरण से संबन्धित गंभीर संकट खड़े हो गए हैं और यदि समय रहते हमने इसका समुचित समाधान न दिया तो मानवीय अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लग जाएगा।

व्याख्यान में स्वागत उद्बोधन देते हुए संस्थान के निदेशक प्रो राकेश सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान के अकादमिक और शैक्षणिक क्रिया- कलापों पर विस्तार से प्रकाश डाला और बताया कि महात्मा गांधी के आदर्शों के प्रचार-प्रसार के लिए यह संस्थान वर्ष पर्यन्त निरंतर कार्यक्रमों का आयोजन करता रहता है।

व्याख्यानमाला के आरंभ में संस्थान के समन्वयक द्वारा अतिथियों को 'हिन्द स्वराज' पुस्तक और पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियों द्वारा संस्थान के गांधी मंडपम में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुआ। कार्यक्रम का संचालन संस्थान की सहायक आचार्या डॉ तोषी आनंद तथा धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के सहायक आचार्य डॉ सुरेन्द्र कुमार ने दिया। कार्यक्रम में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थीगण, विद्यार्थीगण आदि बड़ी संख्या में उपस्थित रहें ।

आउटरीच कार्यक्रम के तहत चौधरी महादेव प्रसाद पी जी कॉलेज के छात्र छात्राओं ने गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान का किया भ्रमण

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की माननीय कुलपति के निर्देश एवं मार्गदर्शन के अनुपालन में, चौधरी महादेव प्रसाद पी जी कॉलेज के विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों ने महाविद्यालय के रसायनशास्त्र के सहायक आचार्य डॉ. प्रमोद शर्मा के नेतृत्व में दिनांक 20 दिसंबर 2024 को गांधी विचार एवं शांति अध्ययन संस्थान का भ्रमण किया। इस अवसर पर संस्थान के समन्वयक डॉ. अविनाश कुमार श्रीवास्तव और शिक्षकों डॉ. सुरेंद्र कुमार और डॉ. तोषी आनंद ने विद्यार्थियों को संस्थान परिसर, गांधी मंडपम, प्रो. जे. एस. माथुर स्मृति तपोवन का भ्रमण कराया। संस्थान के शिक्षक डॉ. सुरेंद्र कुमार व डॉ. तोषी आनंद ने विद्यार्थियों को संस्थान की कार्यप्रणाली और विषयवस्तु से परिचित कराया और महात्मा गांधी पर विद्यार्थियों के विचार भी प्राप्त किए। संस्थान के समन्वयक डॉ. अविनाश कुमार श्रीवास्तव तथा निदेशक प्रो. राकेश सिंह ने ऐसे कार्यक्रमों के सतत् संपादन पर संस्थान की प्रतिबद्धता व्यक्त की।



हिंदी एवं भारतीय भाषा विभाग

विभाग में आईक्यूएसी शताब्दी वर्ष व्याख्यान के अंतर्गत बाबा साहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस के दिन एक व्याख्यान का आयोजन हुआ जिसका विषय “बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर के समय की पत्रकारिता ” विषय पर प्रो.धीरेंद्र वर्मा शताब्दी सभागार में आयोजित हुआ। जिसके वक्ता प्रमुख पत्रकार संपादक लेखक अनिल चमड़िया थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ गाजुला राजू जी ने किया और अध्यक्षता प्रो संतोष भदौरिया ने किया। इनके साथ मंच पर विभागाध्यक्षा प्रो लालसा यादव मौजूद थीं। स्वागत एवं विषय प्रवेश वक्तव्य प्रो भूरैलाल ने रखा। उन्होंने कहा कि अंबेडकर की पत्रकारिता पर इस तरह का कोई कार्यक्रम नहीं दिखाई देता। श्योराज सिंह बेचैन ने अम्बेडकर की पत्रकारिता पर पहला काम किया। वक्ता अनिल चामड़िया ने विषय के माध्यम से भारतीय पत्रकारिता के एक व्यापक फलक को रखा।



अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो संतोष भदौरिया ने कहा कि अंबेडकर एक संवादधर्मी व्यक्ति थे यह अलग बात है कि उस समय के लोगों ने उनसे कितना और कैसा संवाद किया। अंबेडकर की तमाम पत्रिकाओं के बेहतर हिंदी अनुवाद की आवश्यकता है। अंबेडकर सच को सच की तरह कह देने वाले निर्भय व्यक्ति थे। अंबेडकर तथ्यों एवं ब्योरों को रखते हैं। उनके पास ज्योतिबा फुले की एक समृद्ध विरासत थी। अंबेडकर और उनके समय के समाचार पत्रों के चित्र देखने चाहिए जो उस समय की हकीकत बता रहे थे। अंबेडकर की पत्रकारिता की साहित्यिक कलात्मक विरासत के व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है। आज दलित दस्तक, अनिल जी की मांस मीडिया जैसी पत्रिकाएं इन सरोकारों को व्यापक रूप दे रहीं।

आभार ज्ञापन डॉ जनार्दन ने किया। आयोजन में मास मीडिया विभाग राजनीति शास्त्र विभाग सहित अनेक विभागों के छात्र शोधार्थी और प्राध्यापक मौजूद रहे।

Department of Education

On 10th December 2024, the Research Circle of the Department of Education at the University of Allahabad organized an enlightening session titled “Ethnography and Observation Method in Social Sciences.” This significant academic event was held in the seminar hall of the department.

The program aimed to explore the intricate depths of qualitative research methods in social sciences, mainly focusing on ethnography and observational methodologies. Prof. Dhananjai Yadav, Head of the Department of Education, welcomed the guest speaker, Prof. Ashish Saxena. The session’s connoisseur, Prof. Ashish Saxena, Head of the Department of Sociology, captivated the audience with his thought-provoking talk. Prof. Saxena elaborated on the methodological nuances of ethnographic studies and their application in understanding societal structures and cultural phenomena. He shared anecdotes from his fieldwork to make the session interactive and relatable.

The session provided an in-depth understanding of ethnographic methods and their role in gathering first-hand data in social sciences. The speaker shed light on the ethical challenges and strategies involved in observational research. The event highlighted the interdisciplinary nature of ethnography, demonstrating its application across various fields of study, including education, sociology, and anthropology. The participants appreciated the inclusion of real-world examples, which made the discussion practical and actionable.

The event was graced by distinguished dignitaries, researchers, and students who gathered to enrich their knowledge about ethnographic practices in social science research. Many attendees expressed their gratitude for the opportunity to learn directly from the seasoned expert in the field. The interactive Q&A session towards the end further enriched the learning experience, with participants raising queries about practical challenges in fieldwork.

The program successfully achieved its objective of imparting knowledge and fostering dialogue on ethnography and observation methods in social sciences. It served as a platform for intellectual exchange and inspired many young researchers to incorporate these methods into their academic inquiries. The session concluded with a vote of thanks and a commitment to continue exploring innovative research methods in the future.



दर्शनशास्त्र विभाग

दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा आयोजित एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित आवधिक व्याख्यान माला का प्रथम व्याख्यान शुक्रवार को राम नाथ कौल, पुस्तकालय, दर्शनशास्त्र विभाग में संपन्न हुआ। व्याख्याता दर्शनशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष प्रो० एच० एस० उपाध्याय थे। व्याख्यान का विषय: ज्ञानमीमांसा और इसकी समस्याएं: पाश्चात्य दर्शन के विशेष संदर्भ में था। प्रो० उपाध्याय ने कहा भारतीय और पाश्चात्य दर्शनों के मूल में ज्ञानमीमांसा है। भारतीय दर्शन में सांख्य आदि दर्शन यह कहते हैं कि केवल एक ही दर्शन है, वह ख्याति है, विवेक है। दर्शन पुरुष और प्रकृति, चेतना और जड़ के मध्य भेद का ज्ञान है। वहीं पाश्चात्य जगत में दर्शन की परिभाषा ही ज्ञान के प्रति प्रेम के रूप में की गई। उन्होंने कहा कि भारतीय दर्शन में ज्ञान को सही और गलत दोनों रूपों में विभाजित किया गया, जिसे क्रमशः प्रमा और अप्रमा कहते हैं, जबकि पाश्चात्य जगत में ज्ञान गलत नहीं होता, वह सही होता है। उन्होंने प्लेटो से लेकर डेकार्ट, ह्यूम, मूर, रसल, विट्गोन्स्टाइन, कॉलपापर, राइल जैसे मतों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ज्ञान के अनेक स्तर हो सकते हैं, अनेक कसौटियां हो सकती हैं। प्रो० उपाध्याय ने ए. डी. बूजले के उस मत का खंडन किया जिसमें वे कहते हैं कि ज्ञानमीमांसा शब्द ही गलत है।

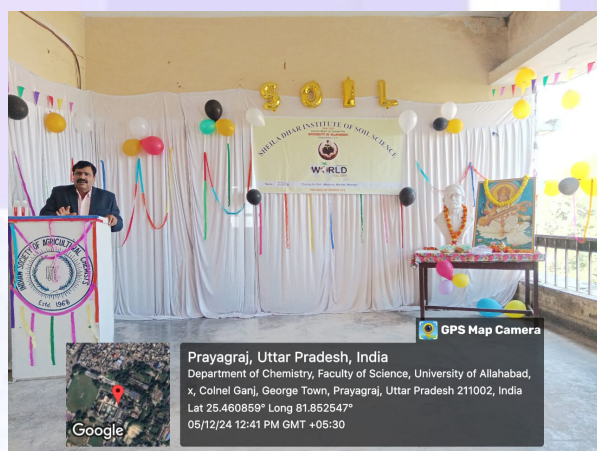
On 16th December, 2024, the Department of Philosophy conducted a lecture which was sponsored by the Indian Council of Philosophical Research (ICPR). Speaking on the title 'Critical Thinking and Philosophising,' Prof. R. C. Sinha, the head of the Department of Philosophy at Patna University, imparted very fruitful and insightful wisdom on Indian philosophy, particularly connecting it with the philosophy of K. C. Bhattacharya. Prof. M. P. Singh, former member, ICPR, and Prof. Jatashankar Tiwari, former HoD, Department of Philosophy, University of Allahabad, were present at the lecture.



कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे दर्शनशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष प्रो० जटाशंकर ने कहा कि प्लेटो के द्वारा कही हुई बात का सादृश्य महाकवि कालिदास की रचनाओं में दिखता है। उन्होंने अतिविज्ञानवाद का खंडन किया और कहा कि सच्चरित्र लोगों के हृदय से उत्पन्न होने वाला विचार ही प्रमाण होता है।

Department of Chemistry

Sheila Dhar Institute of Soil Science, Department of Chemistry, celebrated World Soil Day i.e. 5th December, 2024, by organizing a poster/slogan-making competition on the theme "Caring for soil: Measure, Monitor, Manage" for the students of M. Sc. - Agriculture Chemistry. The students participated in the competition with great zeal and enthusiasm. The occasion was also marked as the death anniversary of late Prof. N. R. Dhar. The students remembered him and his love for the soil. A floral tribute was given to him, which was followed by sapling plantation in the field of the Institute. All the faculty members and HoD, Prof. Dinesh Mani, motivated the students to SAVE SOIL.



Department of Education

On 17th December, 2024, a special lecture was organized by the Research Circle of the Department of Education at the University of Allahabad on the topic "Historical Method of Research" by Prof. Prakash Sinha (Retired Prof., Department of Ancient History, Art & Archaeology, University of Allahabad). The event was held in the seminar hall. The event commenced with a formal welcome address by Prof. Dhanajay Yadav, Head of the Department of Education. He thanked Prof. Prakash Sinha for accepting the invitation and sharing his valuable insights on historical research. Following the welcome address, the special guest, Prof. Prakash Sinha, took the stage to deliver the lecture. Prof. Prakash Sinha shared his valuable insights and research findings with the scholars, drawing attention to key aspects of the Historical research method. He encouraged the research scholar to ask questions without hesitation. He advised them to incorporate three significant qualities, i.e., problem orientation, patience and note of disagreement, to become a good researcher.

After the lecture, a Q&A session was held, allowing faculty members and research scholars to ask questions and seek further clarification on the lecture content. The event concluded with the vote of thanks delivered by Kumari Kusum on behalf of the research circle. Dr. Patanjali Mishra, was the convener of the Program. The research scholars of the research circle actively participated in organizing this special lecture.



Incubation Centre, UoA

The Incubation Centre, UoA organized a session on 'Financing for Startups' for the students of B. Tech and B.B.A. of the University and the incubatee startups on 5th December, 2024. The Resource person, Dr Archana Singh, Assistant Professor, Department of Commerce enlightened the participants on various aspects of generating and managing finances for startups. Dr. Shefali Nandan, Coordinator, Incubation Centre, UoA gave the welcome address, and Dr Sandeep Goyal delivered vote of thanks. The program was conducted by Dr Cherita, Assistant Professor, Department of Zoology. Heartfelt thanks to Prof Tanveer Siddiqui and Dr Neelesh Anand for their support. Dr Chakadola was also present on the occasion.



Department of Mathematics

National Mathematics Day was celebrated in the department of Mathematics on 22nd December 2024. Quiz competitions, essay writing and invited lecture by eminent speakers like Prof Abhay K Singh from IIT Dhanbad, Prof Karam Deo Shankhadhar from IISER, Bhopal and Prof D. Surya Ramana from HRI, Prayagraj were organized. Winners of events were awarded prizes and certificates. The program ended with vote of thanks by Prof P.K. Singh.



University of Allahabad: As I Know This Great Institution

*Prof. M.H. Qureshi

VOLUME, 33

It was in the month of July 1957 that I entered the campus of Allahabad University, with the result of the final examination of Intermediate in my hand. The confidence level was high as I could pass class XII in first division with a place in the merit list. I came from a small, non-descript town, Sultanpur (Avadh) where there was no electricity supply at that time and we had to study under the light of a lantern. I was filled with excitement and hope to get admission in B.A. (first year) based on my merit. For a young student from a small town, the first view of the Senate Hall and two grand buildings on the flanks (the library, at that time, on the left and the English Department on the right) was awe inspiring. The Banyan Tree at the back lawn of Senate Hall standing majestically with its large foliage attracted attention. Later we could know that this tree was the basis of the seal of the university which read, "QUOT RAMI TOT ARBORES" in Latin and "As many Branches so many Trees."

The campus, housing Arts and Commerce faculties, was witnessing a lot of buzz as new aspirants were running here and there to complete the admission process. I could get admission in B.A.Part-I, with English Literature, Economics and Geography. I could also get State Bursary Scholarship of Rs.60/per month based on my rank in the merit list of the Intermediate Examination.

Professor Shri Ranjan, a professor of Botany Department was the Vice Chancellor of the University when we joined in B.A.Part I in 1957.

Every Department of the university had academic giants. We were lucky to see some of the legendary figures such as Professors S. C. Deb, Prof.Raghupati Sahai Firaq Gorakhpuri, Ram Nath Dubey, Jamshed Kai khusro Mehta, Dharam Veer Bharti, Ram Kumar Verma, Ehtesham Husain and many more.

The English Department was being headed by Prof. S.C. Deb who was known as a "moving dictionary". I had a chance to go to his room in the month of November 1957 to request him to provide a teacher to our class as time was running out and there was no teacher for our English Literature class. The class fellows asked me and Alopi Prasad Srivastava to meet and request Prof. Deb to arrange a teacher. We gathered courage, went to his room, knocked at the door and heard a roaring voice, 'come in' as we entered the room, he roared again, "what has brought you here? Meekly, I said, 'Sir, we do not have a teacher for our class, there must be some arrangement'. He said annoyingly 'you must get out!' Both of us realized our mistake and ran out of his room. We were surprised that the next morning, Mr. Lalit Mohan Upadhyay was there in the class room to teach us English literature. The class was happy that arrangement was made so quickly. We realized that Prof. Deb had a very soft heart within his tough exterior. We also used to attend the classes of Prof. K.K. Mehrotra, a very soft-spoken teacher taking classes sitting in his wheel chair. The other luminary was Prof Raghupati Sahai Firaq Gorakhpuri, a professor of English and a renowned poet of Urdu. He conducted my viva in B.A. Final class. I still remember that the first question he asked was, "who was the founder of Banaras Hindu University?" My reply was, "Pandit Madan Mohan Malviya." The other question was, "why was he known as Malviya?" My reply was a mere guess that Malviya may be a sub-caste of Brahmans. Firaq Saheb corrected me and said that he belonged to Malva that is why he was known as Malviya. He also reminded me that the question was asked because I was a student of Geography. Thus, I learnt a lesson of Geography of India from my Professor of English.

I had the opportunity to listen to him reciting his ghazals in the Mushairas held in Senate Hall as well as once in Mayo Hall lawns in Allahabad. I still remember two lines:

“Is khandahar mein hain, kuch chdiye toote huye Inheen se kaam chhalao, bahut andhera hai”.

The Geography and Education Departments shared the same building. Now, that building has been removed and the University library stands there. Geography department was headed by Prof. Ram Nath Dubey whom I had seen teaching P.G. classes sitting on an easy chair. The same year he retired. He never taught our class. After 44 years of leaving Allahabad, I was asked to deliver “R. N. Dubey Memorial Lecture in 2005 by my teacher Prof L. R. Singh. The lecture was presided over by Dubey ji’s son-in-law, Shri T.N. Chaturvedi, Governor of Karnataka.

I have vivid memory of Prof. J. K. Mehta and Dr. P. D. Hajela who edited the book titled “Fundamentals of Economics” wherein the Gandhian concept of deliberate control of wants was propounded. Prof. Mehta lived in Civil Lines and always came to the Department in a rickshaw. He used to give free homeopathic medicines in the afternoon of Tuesdays. I also went to consult him for my acute cough and his medicine helped.

Allahabad University was established on 23rd September, 1887 and its 70th anniversary was celebrated in 1958. Pandit Jawaharlal Nehru was invited as the Chief Guest. A group of N.C.C. cadets were prepared to offer the Guard of Honour. I was one in the group and had a chance to see Nehru ji from close quarters as he walked along the file to inspect the guards.

I joined the M. A. course in Geography in 1959 and passed M.A. in first division and stood first in order of merit in 1961. I joined as a lecturer in St. John’s College Agra on 6th August 1961 and never looked back. Moved on to Jodhpur, to JNU, to Addis Ababa (Ethiopia), to Bremen University (Germany). But the fact remains that Allahabad University has shaped my personality as my *alma mater*, its memories are embedded deep inside and make me nostalgic even after the lapse of more than 60 years.

* Professor (Retired)
Centre for the Study of Regional Development
School of Social Sciences
Jawaharlal Nehru University

BOOK OF THE EDITION

The Miracle Morning: The 6 Habits That Will Transform Your Life Before 8AM

OVER 2 MILLION COPIES SOLD



The 6 Habits That Will Transform Your Life Before 8AM

HAL ELROD

MOVIE OF THE EDITION

The Six Triple Eight



Some Important Instructions for AU TALK

AU Talk is a monthly digital newsletter of the University of Allahabad that shares latest curricular and extra-curricular activities of the university. It seeks to enhance the perception of the university by highlighting its accomplishments in diverse fields of undertaking. Please note that

- AU TALK publishes news about seminars/workshops/conferences that have taken place at any Department or Centre of the University. A piece of news along with a **photograph of the organizers** should be emailed at vizianagramcurator.au@gmail.com
- The magazine publishes informative articles also. Articles should aim to bring out important scientific, ethical, and environmental issues and must be lucid in their message to society. They can be written in Hindi or English. In one edition, the magazine can publish up to four such articles.
- **Do not send pictures capturing garlanding or shawl/memento-giving moments.**
- The magazine should be widely circulated among students and faculty and on all social media platforms so that the excellent work done under the auspices of the University of Allahabad reaches far and wide and benefits all.

For any query feel free to contact the Editorial Board.